आत्मा को पवित्र करने का पर्व क्रिसमस

क्रिसमस का पर्व खुशियों का पर्व है। यह केवल बच्चों के लिए ही नहीं बल्कि सभी उम्र और वर्ग के लोगों के लिए है। खुदा के संदेशवाहक के रूप में ईशु का संदेश भी मानवीय एकता को जोड़ने तथा अलौकिकता के तरफ ले जाने वाला है। बाईबिल और कुरान में कभी मानवीयता को तोड़ने की बात का उपदेश नहीं है। मुक्ति और जीवनमुक्ति संसार में प्रत्येक मनुष्य को चाहिए चाहे वह हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख या इसाई हो। क्योंकि आत्माओं का एक ही धर्म, एक भाषा, एक राज्य तथा एक पिता-परमात्मा होता है। शरीर के रूप में विभाजन वास्तव में आत्मा के धर्म को विभाजित नहीं करता है। यही संदेश ईशा, मूसा, पैगम्बर, कबीर, राम और रहीम का भी था। शारीरिक चोले में खेल खेल रही आत्माओं को अपना धर्म भूलना ही धर्म और जाति के रूप में विभाजित करता है। पवित्रता, खुशी, शान्ति सर्व को प्रिय है और यही आत्मा की चाहना होती है। यही वजह है कि दुनियां में भौतिक सुखों पर सोये हुए मनुष्य को एक अजीब शान्ति और सुख की तलाश निरन्तर होती है।

वैसे पूरे विश्व में क्रिसमस पर्व धूमधाम से मनाया जाता है। वर्ष के अन्त तथा नये वर्ष के आगमन में सफेद दाढ़ी वाले बाबा का बच्चों को गिफ्ट और मिठाई देने के पीछे आध्यात्मिक महात्म्य है। इसी को अनेक धर्मों में भी अपने-अपने रीति-रिवाजों के साथ मनाया जाता है। बाईबिल में अच्छी तरह स्पष्ट है कि यदि मनुष्य को फरिश्ते बनना है और बहिस्त में जाना है तो उसे जल स्नान के साथ-साथ ज्ञान स्नान अति आवश्यक है। इसी बात को कबीर दास ने कहा है कि माला फेरत युग भया, फिरा ना मन का फेर, कर का मनका डार दे, तनका मनका फेर। अर्थात माला फेरने से कभी भी मनुष्य के अन्दर की बुराईयां दूर नहीं हो सकती। जब तक कि मन में ज्ञान का मड़का नहीं फिरता। योहन के तीसरे अध्याय में यही बात ख्रीस्त ने अपने प्रेरितों से कहा था कि बुरे संस्कारों से मुक्ति के लिए जब तक मनुष्य ज्ञान जल से अपने को नहीं सींचता और पवित्रता के बल पर जन्म नहीं होता तब तक वह स्वर्ग का भागीदार नही होगा।

ज्ञान स्नान एक ऐसा स्नान होता है जिससे मनुष्य के व्यक्तिगत संस्कारों के परिवर्तन के साथ-साथ दूसरों के संस्कारों के परिवर्तन में भी मदद करता है। खासकर उन लोगों के लिए जो आत्मिक रूप से बिल्कुल निर्बल और परमात्मा से दूर असहाय है। इसी निर्बलता को दूर करना परमात्मा की सच्ची सेवा है। सांता क्लाज के क्रिसमस पर्व पर दिया गया संदेश भी इसी बात का दृष्टिगोचर है। दूसरे की भलाई करना, बुरे संस्कारों में डूबती आत्मा को निकालना, गम के सागर में डूब रही आत्माओं को खुशी के झरने में ले जाना तथा अपने स्वधर्म को भूलने वाले का निज धर्म की याद दिलाना इस पर्व का मुख्य संदेश है। इसाई धर्म में ईश्वर के दूत और प्रभू के रूप में माने जाने वाले इशु ने यह पूर्ण रूप से संदेश दिया कि हमें अपने धर्म को कभी नहीं भूलना चाहिए तथा ईश्वर की सेवा के लिए प्राणों की आहुति दे देना भी भगवान की

सेवा पूरी नहीं कर सकता। धर्म की भी उन्होंने व्याख्या करते हुए उपदेश दिया कि धर्म का अर्थ भौतिक धर्मो से नहीं बल्कि अलौकिक और आन्तरिक धर्मों से है। आत्मा की ज्योति जगाने से ही सर्व संसार में सत्य और शान्ति का प्रकाश हो सकता है।

ईशू ने मनुष्यों को पापों से मुक्ति पाने के लिए कहा है कि हे मनुष्य पाप किये हुए कर्मों को छिपाओं मत उसे स्वीकार करो। इससे पाप को पुण्य में बदलने तथा अज्ञान से ज्ञान में जाने के लिए ईश्वर से शक्ति प्रदान होती है। वह व्यक्ति सदैव महान होता है जो अपने कर्मों को सर्व के सामने सहजता तथा विनम्रता से स्वीकार कर लेता है। यही सभी धर्मों का संदेश है। उसके लिए फल और फूलों से लदे पेड़ का उदाहरण दिया जाता है। कि जब पेड़ में दूसरों को सुख देने वाले फल लगते है तो वह झुक जाता है। ऐसे ही मनुष्य भी जब मूल्यों से परिपूर्ण हो जाता है तो वह विनम्र और सहनशील होकर अपकार करने वाले पर भी उपकार करता है। दु:ख देने वाले को भी सुख प्रदान करता है।

यदि हम क्रिसमस दिवस की उपयोगिताओं पर आये तो आध्यात्मिक व्याख्या में इसमें बहुत सारी अतीत की कहानी का सार है। पुराने साल सृष्टि के अन्त का द्योतक है। सांता क्लाज द्वारा बच्चों को खुश करने वाले उपहार और मिठाईयों का वितरण करना अर्थात उन्हें हमेशा के लिए खुशियों से भरपूर करना है। क्योंकि यह पर्व वर्ष में केवल एक बार ही आता है। इसका अर्थ यही है कि परमात्मा मानवीय तन में पुरानी दुनियां के अन्त तथा नयी दुनियां के प्रारम्भ काल में इस सृष्टि पर अवतरित होकर मनुष्य आत्माओं रूपी बच्चों को पूरे कल्प में सुख-शांति और समृद्धि से भरपूर करने के लिए दिव्य गुणों और आध्यात्मिक शक्तियों का उपहार प्रदान करते हैं। इसके बदले वे पुरानी दुनियां वाले आसुरी संस्कारों को समाप्त कर दैवी संस्कारों को आत्मसात करने की प्रेरणा प्रदान करते हैं। आत्मा की ज्योति सदा जगी रहे, इसके लिए आध्यात्मिक ज्ञान और ईश्वर रूपी याद का घृत प्रदान करते है जिससे पूरे कल्प में आत्मा की ज्योति जगी रहे और परमात्मा की संतान सभी आत्मायें सुख शान्ति से भरपूर प्रत्येक दिन खुशियों की बरसात होती रहे। यही क्रिसमस त्योहार की व्याख्या तथा परमात्मा का संदेश है। यह सृष्टि के अन्त का समय है जिसमें परमात्मा शिव अवतरित होकर सभी मनुष्यात्माओं को दिव्य और देवतायी जीवन का उपहार प्रदान कर रहे हैं। यही ईश्वर का संदेश है।

- ब्रह्माकुमारीज् वार्ता फिचर्स
www.bkvarta.com